# परिचय

**1. भाषा :** भाव या विचार की अभिव्यक्ति के लिए लिखित या उच्चरित सार्थक ध्वनिसमूह को भाषा कहते हैं । जैसे - (क) अहा, कितना सुरम्य वातावरण है !

(ख) राष्ट्र तथा राष्ट्रभाषा की महत्ता सर्वोपरि है ।

**2. स्वरूप :** लिखित भाषा के दो प्राथमिक स्वरूप होते हैं - (क) गद्य (ख) पद्य ।

(क) ऐसा कहने के उपरांत उन्होंने ज्योंही पुनः उस ओर देखा, उनकी आँखें सीता के मुख को देखती ही रह गईं ।

(ख) अस कहि फिरि चितए तेहि ओरा।
सियमुख ससि भए नैन चकोरा

**3. भाषा के अंग :** भाषा के प्रमुख चार अंग हैं - वर्ण, पद (शब्द), वाक्य और चिह्न ।

**4. व्याकरण :** लिखित या उच्चरित भाषा के सर्वांग परिचय तथा प्रयोग के नियमों से परिचित करानेवाले शास्त्र को व्याकरण कहते हैं ।

**5. व्याकरण के अंग :** भाषा के अंग के आधार पर व्याकरण के भी चार अंग बनते हैं – वर्ण विचार, शब्द विचार, वाक्य विचार और चिह्न विचार ।

**6. काव्यशास्त्र :** कविता के स्वरूप और उसकी विशेषताओं का परिचय देनेवाले शास्त्र को काव्यशास्त्र कहा जाता है । इसे साहित्यशास्त्र भी कहा जाता है । कुछ विद्वानों ने इसे साहित्य का व्याकरण भी कहा है ।

**7. भाषाविज्ञान :** भाषा को संपूर्णता में अपने अध्ययन का विषय माननेवाले शास्त्र को भाषाविज्ञान कहा जाता है । व्याकरण और भाषाविज्ञान में अंतर यह है कि व्याकरण भाषा का सर्वांगपूर्ण परिचय कराता है, उसके प्रयोगों को नियमबद्ध कर उसे परिनिष्ठित स्वरूप प्रदान करता है और उसके नियमन का कार्य करता है । भाषाविज्ञान भाषा की आकृति, उसके इतिहास तथा अंगों का यथातथ्य अध्ययन करता है ।

**8. भाषा-भेद :** भाषा देशकाल सापेक्ष होती है, इसलिए इसके हजारों भेद हो जाते हैं । पालि-प्राकृत जैसी कुछ प्राचीन भाषाओं का प्रयोग आज प्रायः बंद हो चुका है । वर्तमान में पूरे विश्व में लगभग छह हजार भाषाओं का पता भाषावैज्ञानिकों को हो चुका है । इन भाषाओं को अनेक वर्गों में विभाजित किया गया है ।

**9. भाषा, उपभाषा, सहभाषा और विभाषा या बोली**

**भाषा :** जिस भाषा का अपना सर्वमान्य व्याकरण और एक परिनिष्ठित स्वरूप होता है उसे भाषा कहते हैं। उसे ही परिनिष्ठित भाषा भी कहा जाता है । संस्कृत, अंग्रेजी, फ्रांसीसी, रूसी, अरबी, फारसी, हिंदी, बाँग्ला आदि परिनिष्ठित भाषाएँ हैं ।

**उपभाषा :** उपभाषा उसे कहते हैं जो किसी परिनिष्ठित भाषा-क्षेत्र के अंतर्गत समान लिपि तथा

वर्णमाला के साथ प्रचलित होती है । एक भाषा की अनेक उपभाषाएँ होती हैं । इन उपभाषाओं के शब्द भांडार का अधिकांश आपसी तथा परिनिष्ठित भाषा से समानता वाला होता है ।

उपभाषा का एक रूप सहभाषा का भी होता है । संस्कृत की समकालीन उपभाषाओं के रूप में प्राकृत, पालि आदि रही हैं । ये भाषाएँ संस्कृत की सहभाषाएँ भी रही हैं । इसी तरह भोजपुरी, मैथिली, मगही, ब्रजभाषा, अवधी आदि हिंदी की उपभाषाएँ हैं । ये उद्‌गम की दृष्टि से हिंदी की उपभाषाएँ भी कही जा सकती हैं जबकि आपस में ये अनिवार्यतः सहभाषाएँ हैं । हिंदी की ये सहभाषाएँ उपभाषा के रूप में उसे समृद्धि देती हैं तथा उससे बहुविध पोषण प्राप्त करती हैं ।

**विभाषा या बोली :** विभाषा या बोली उस भाषा रूप को कहते हैं, जिसका स्वतंत्र स्वरूप तो प्रचलन प्राप्त कर चुका होता है, परंतु सर्वमान्य व्याकरणिक व्यवस्था के अभाव में उसके उच्चरित या लिखित स्वरूप में एकरूपता नहीं आई होती है । क्षेत्र के अनुसार इसके अनेक रूपभेद देखे जाते हैं । किसी बोली के साहित्य का अधिकांश मौखिक रूप में ही प्रचलित रहता है ।

## 10. भारतीय भाषाएँ

भाषावैज्ञानिकों के अनुसार वर्तमान विश्व में लगभग छह हजार भाषाएँ प्रचलित हैं । इनमें भाषाएँ, उपभाषाएँ तथा बोलियाँ सब हैं ।

अलग-अलग भाषाओं की प्रकृति तथा प्रयोग में समानता-विषमता के आधार पर भाषावैज्ञानिकों ने इन भाषाओं को अनेक वर्गों में विभाजित किया है । उन वर्गों को परिवार का नाम दिया गया है । उनमें एक भारोपीय परिवार है । 'भारोपीय' का अर्थ है 'भारत - यूरोपीय' । यानी, भारत तथा यूरोप की प्रमुख भाषाओं का परिवार । इसे 'आर्यकुल' भी कहा गया है । संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, पुरानी ईरानी, ग्रीक, लैटिन आदि प्राचीन तथा हिंदी, बाँग्ला, मराठी, गुजराती, उर्दू, फ्रांसीसी, अंग्रेज़ी, जर्मन, नई ईरानी आदि आधुनिक भाषाएँ इस भारोपीय परिवार या आर्यकुल की ही हैं ।

भारतीय भाषाओं की कुल संख्या लगभग तीन दर्जन है । ये चार परिवारों की हैं -

### (i) भारतीय आर्यभाषा परिवार

**प्राचीन भाषाएँ** - 1. संस्कृत, 2. पालि, 3. प्राकृत, 4. अपभ्रंश, 5. पैशाची ।

**आधुनिक भाषाएँ** - 1. हिंदी, 2. ब्रजभाषा, 3. बाँग्ला, 4. अवधी, 5. मराठी, 6. गुजराती, 7. पंजाबी, 8. बुंदेली, 9. राजस्थानी, 10. हरियाणवी, 11. कुमायूँनी, 12. गढ़वाली, 13. कोंकणी, 14. छत्तीसगढ़ी, 15. बघेली, 16. उड़िया, 17. असमिया आदि ।

### (ii) द्रविड़ परिवार

1. तमिल, 2. तेलुगु, 3. कन्नड़, 4. मलयालम ।

### (iii) जनजातीय भाषाएँ (ऑस्ट्रिक परिवार)

1. मुंडा, 2. कोल, 3. संथाली, 4. खड़िया, 5. खासी आदि ।

### (iv) दरदी या दरद परिवार

इसे (दरदी को) प्राचीन व्याकरणों में पैशाची कहा गया है । इसकी आधुनिक भाषा कश्मीरी है ।

## 11. हिंदी भाषा : ऐतिहासिक विकास-क्रम

विश्व की प्राचीनतम उपलब्ध भाषा वैदिक संस्कृत है । उसमें भी ऋग्वेद की भाषा सबसे पुरानी है । निश्चय ही उस व्यवस्थित भाषा का कोई पूर्व प्रचलित प्राकृत रूप रहा होगा । उपनिषदों में प्रयुक्त भाषा ऋग्वेद की भाषा का विकसित रूप है और उस भाषा का ही विकसित-परिष्कृत रूप वाल्मीकि की 'रामायण' में दिखाई पड़ता है । पाणिनि ने जिस भाषा का व्याकरण लिखा, वह वाल्मीकि तथा व्यास जैसे कवियों द्वारा 'रामायण', 'महाभारत' तथा विभिन्न पुराणों में समुन्नत रूप प्राप्त कर चुकी थी ।

हिंदी का विकास सीधे संस्कृत से नहीं हुआ है । इसका विकास अपभ्रंश से हुआ है, जिसकी पूर्व भाषाओं की परंपरा प्राकृत-पालि से होती हुई वैदिक काल से भी पूर्व अज्ञात भाषा-काल तक जाती है । उस अज्ञात काल की अनेक भाषाओं में वैदिक संस्कृत का परिनिष्ठित स्तर तक लिपिबद्ध विकास हुआ और उसके स्वरूप में यास्क आदि ऋषियों ने एक सीमा तक निश्चितता लाई । संभव है, वाल्मीकि की 'रामायण' और पुराणों की भाषा वैदिककालीन वेदों-उपनिषदों की संस्कृत का नगरीय सहभाषा रूप रही हो जो बाद में प्रमुखता प्राप्त करती गई । इन दोनों के अलावा उस काल में अनेक जनभाषाएँ (आम जनता की भाषाएँ) भी रही होंगी, जिनमें कुछ के रूपों का समन्वित विकास पालि के रूप में हुआ । उससे प्राकृत का विकास दिखाई पड़ता है । प्राकृत के अनेक क्षेत्रीय रूप साहित्यिक प्रयोग में आये । उन्हीं रूपों के अलग-अलग नामों से अपभ्रंशों का विकास हुआ और उनसे हिंदी आदि आधुनिक आर्यभाषाओं का । इन सबको संस्कृत लगातार प्रभावित करती रही । साहित्यिक स्तर पर वह भी इन भाषाओं से प्रभावित होती रही, परंतु बहुत ही कम मात्रा में । इस प्रकार हिंदी का विकास क्रम यह बनता है -

**वैदिक पूर्व जनभाषा → वैदिककालीन जनभाषाएँ → पालि → प्राकृत → अपभ्रंश → हिंदी (और अन्य आधुनिक भारतीय भाषाएँ) ।**

अपभ्रंशों से आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास का संक्रांति काल प्रायः छठी शती से दसवीं शती तक रहा है ।

हिंदी का वर्तमान स्वरूप शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित है । इसके वर्तमान विकसित रूप में अर्धमागधी तथा मागधी अपभ्रंशों से विकसित सहभाषाओं का उल्लेखनीय योगदान रहा है । एक तालिका द्रष्टव्य है -

| **शौरसेनी अपभ्रंश (पश्चिमी हिंदी क्षेत्र के अंतर्गत)** | **अर्धमागधी अपभ्रंश (पूर्वी हिंदी क्षेत्र के अंतर्गत)** | **मागधी अपभ्रंश (बिहार प्रदेश के अंतर्गत)** |
|---|---|---|
| खड़ी बोली या कौरवी | अवधी | भोजपुरी |
| ब्रजभाषा | बघेली | मगही |
| हरियाणवी | छत्तीसगढ़ी | मैथिली |
| बुंदेली | | अंगिका |
| कन्नौजी | | बज्जिका |

इस तरह से स्पष्ट होता है कि ये भाषाएँ वस्तुतः सहभाषाएँ हैं । वर्तमान हिंदी साहित्य में खड़ी बोली, ब्रजभाषा, अवधी, राजस्थानी, मैथिली तथा भोजपुरी रूप विशेष प्रतिष्ठित हो गए हैं ।

(क) आदिकालीन विद्यापति की भाषा शुद्ध मैथिली रही ।

(ख) भक्तिकाल में कबीर की भाषा पर खड़ी बोली और भोजपुरी का विशेष प्रभाव रहा ।

(ग) जायसी तथा तुलसीदास की भाषा अवधी थी ।

(घ) सूरदास तथा रीतिकाव्य की भाषा ब्रजभाषा थी ।

(ङ) मीराबाई की भाषा उत्तरी राजस्थानी में प्रचलित मेवाती थी ।

(च) आधुनिक काल (उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य) से प्रारंभिक हिंदी का प्रमुख भाषा-रूप खड़ी बोली हिंदी का है ।

**12. हिंदी भाषा का क्षेत्र**

हिंदी भाषा का प्रयोग करनेवाले प्रमुख क्षेत्र हैं - बिहार, झारखंड, उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, दिल्ली, राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश । इन राज्यों के अतिरिक्त हिंदी प्रदेशों के सटे हुए प्रदेशों में भी हिंदी खूब लिखी-बोली जाती है । वैसे आज समूचे भारतवर्ष में हिंदी संपर्क भाषा के रूप में बोली-समझी जाती है ।

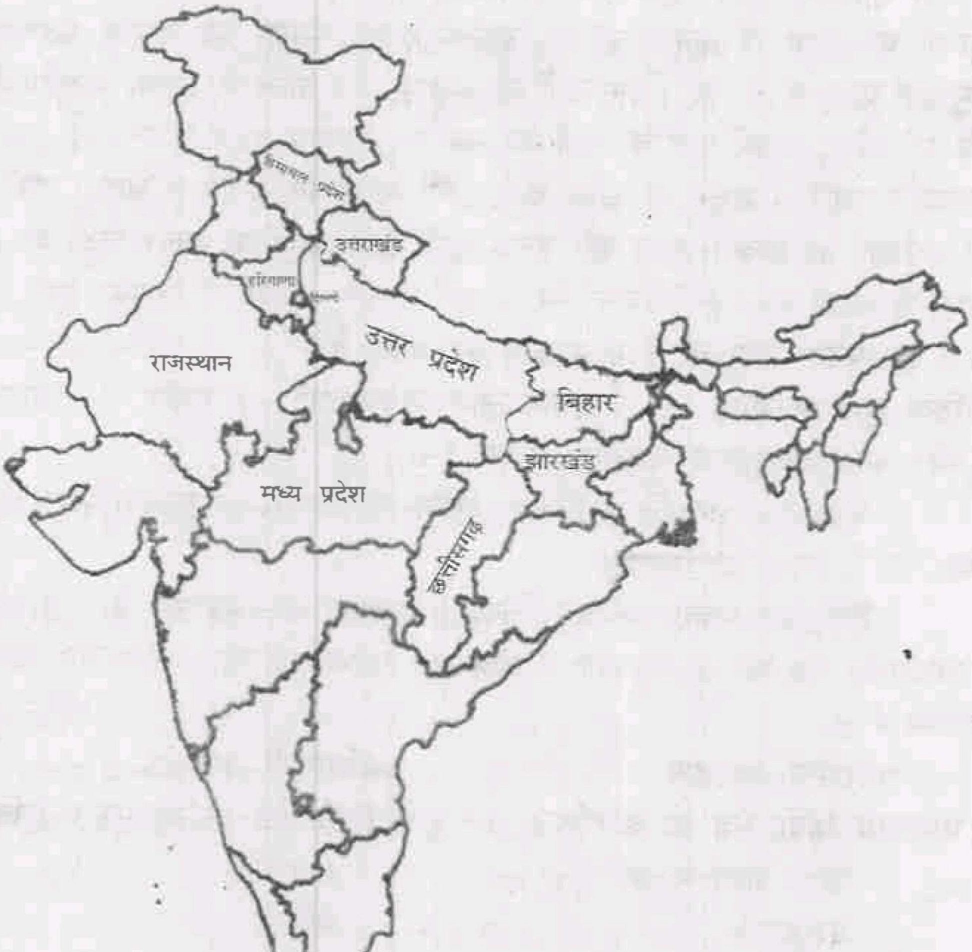


**13. 'हिंदी' संज्ञा-विधान**

'हिंदी' शब्द का संबंध संस्कृत शब्द 'सिंधु' से माना जाता है । 'सिंधु' सिंध नदी को कहते थे और इसी आधार पर इसके आस-पास की भूमि 'सिंधु' कही जाने लगी । यही 'सिंधु' शब्द ईरान में पहले 'हिंदु' हुआ और फिर 'हिंद'। इसका अर्थ था 'सिंध प्रदेश' । ईरानियों का परिचय धीरे-धीरे भारत के अधिक भागों से होता गया तथा यह 'हिंद' शब्द पूरे भारत का वाचक हो गया । इसी 'हिंद' में ईरानी का 'ईक' प्रत्यय लगने से 'हिंदीक' शब्द बना जिसका अर्थ है 'हिंद का' । 'हिंदीक' से ही यूनानी शब्द 'इंदिका' या अंग्रेजी शब्द 'इंडिया' बना । 'हिंदी' भी 'हिंदीक' का ही बदला हुआ रूप है और इसका अर्थ है 'हिंद' का । भाषा के अर्थ में इसका प्रयोग बाद में प्रारंभ हुआ ।

◆ ◆ ◆